मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 67, अगस्त(द्वितीय), 2019

3 अगस्त जयंती पर विशेष-

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और उनका काव्य

पवनेश ठकुराठी 'पवन'

हिंदी के प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त, 1886 को चिरगांव, झांसी (उत्तर प्रदेश)में हुआ था। मैथिलीशरण गुप्त अपने पिता सेठ रामचरण कनकने और माता कौशल्या बाई की तीसरी संतान थे। माता और पिता दोनों ही परम वैष्णव थे। मैथिलीशरण गुप्त की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई और उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी, बंगला और मराठी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। 12 साल की उम्र में ही उन्होंने कविता रचना शुरू कर दी थी. सर्वप्रथम "ब्रजभाषा" उन्होंने रचनाएं लिखीं।तब आप कविता लिखने के लिए रसिकेश उपनाम का प्रयोग करते थे। औपचारिक शिक्षा में गुप्तजी की विशेष रूचि नहीं थी। इस संदर्भ में प्रभाकर माचवे के विचार उल्लेखनीय हैं-" मैथिलीशरण गुप्त की स्कूल या कालेज में पढ़ाई चाहे न हुई हो, पर जिंदगी की खुली किताब से उन्होंने खूब सीखा।"

सन् 1895 में गुप्तजी का विवाह हुआ किंतु 1903 में पत्नी की मृत्यु होने के कारण उन्होंने अगले वर्ष दूसरा विवाह कर लिया किंतु 1014 में दूसरी पत्नी भी चल बसी। तब दो-तीन साल बाद उन्होंने तीसरा विवाह किया। तीसरी पत्नी से उनकी छह संतानें उत्पन्न हुईं, किंतु एकमात्र पुत्र को छोड़कर शेष सभी चल बसीं।इस प्रकार उनका पारिवारिक जीवन बड़ा ही वेदनापूर्ण रहा।

मैथिलीशरण गुप्त को ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली में कविता लिखने की प्रेरणा महावीर प्रसाद द्विवेदी से मिली। वस्तुत: गुप्तजी स्वभाव से ही लोकचेतना के कवि थे जिस कारण वे अपने युग की समस्याओंके प्रति विशेष रूप से संवेदनशील रहे।उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जन जागरण फैलाने का काम किया.महात्मा गांधी के भारतीय राजनीतिक जीवनमें आने से पूर्व ही गुप्त जी का युवा मन गरम दल और तत्कालीन क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित हो चुका था। लेकिन बाद में महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू और विनोबा भावे के सम्पर्क में आने के कारण वह गांधीवाद के व्यावहारिक पक्ष और सुधारवादी आंदोलनों के समर्थक बने।1936 में गांधी जी ने ही उन्हें मैथिली काव्य–मान ग्रन्थ भेंट करते हुए 'राष्ट्रकवि' का सम्बोधन दिया।गुप्तजी ने देशभक्ति से भरपूर रचनाएं लिखकर स्वतंत्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि वे भारतीय संस्कृति, परंपरा एवं

इतिहास के परम भक्त थे तथापि अंधविश्वासों, रूढ़ियों और थोथे आदर्शों में उनका कदापि विश्वास नहीं था।वे भारतीय संस्कृति के प्रगतिशील रूप के पक्षधर थे।

गुप्तजी मूलत: कवि थे। इनकी प्रारंभिक कविताएं मोहिनी, सरस्वती पत्रिकाओं में छपीं। गुप्तजी की कविताओं में बौध्द दर्शन, वैदिक ग्रंथों, रामायण, महभारत आदि के कथानक स्वत: उभर कर आते हैं। मानवीय संवेदना और जीवन दर्शन के साथ-साथ इनकी रचनाओं में यत्र- तत्र सूक्तियां बिखरी पड़ी हैं। राष्ट्र प्रेम इनकी कविताओं का प्रमुख स्वर है। 'रंग में भंग'(1909), 'जयद्रथ वध'(1910), भारत- भारती(1912), तिलोत्तमा(1915), चंद्रहास(1916), किसान(1916), वैतालिक(1916), पत्रावली(1914),शकुंतला(1923), लीला(1960), पंचवटी(1925), 'विकट भट(1928), 'गुरुकुल'(1928),साकेत(1931), 'सिध्दराज'(1936), 'जयभारत'(1952), 'द्वापर', 'कुणाल(1942), 'यशोधरा(1932)',अर्जन-विसर्जन'(1942), 'काबा-क़र्बला' (1942), रत्नावली(1960)और स्वस्ति और संकेत(1983) आपकी प्रमुख प्रकाशित काव्य-कृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'तिलोत्तमा' और 'चरणदास' नाम से दो नाटक भी लिखे। मैथिलीशरण गुप्त ने कविता के क्षेत्र में अतुल्य योगदान दिया है।वे खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं।आपने अपनी कविताओं के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में स्थापित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया।

भारतीयता, नैतिकता, राष्ट्रप्रेम और परंपरागत मानवीय संबंधों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्राथमिक गुण हैं, जो भारत- भारती से लेकर जयद्रथ वध,पंचवटी, यशोधरा,साकेत और जयभारत तक में प्रतिष्ठित हुए हैं। 'साकेत और 'भारत-भारती' मैथिलीशरण की सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। भारत भारती में उन्होंने स्वदेश प्रेम का निरूपण करते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से देश को उबारने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग किया है। काव्य साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु मैथिली शरण गुप्त को 1952 में राज्यसभा की सदस्यता दी गई तथा 1954 में उन्हें पद्मभूषण से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, साकेत पर मंगला प्रसाद पुरस्कार तथा साहित्य वाचस्पति की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। इसके अलावा काशी विश्वविद्यालय ने उनका सम्मान करते हुए उन्हें डी.लिट्. की उपाधि भी प्रदान की। 12 दिसंबर, 1954 को चिरगांव में ही गुप्तजी का देहावसान हो गया।

मैथिलीशरण गुप्त की कविताएं आपसी प्रेम, सौहार्द, मानवता एवं शांति का संदेश देती हैं। इनकी कविताएं विश्व बंधुत्व की भावना की द्योतक हैं तथा कविताओं में मौजूद इनकी दृष्टि इनकी वैश्विक चेतना को उद्घाटित करती हैं। मनुष्य के जीवन दर्शन को इन्होंने अपनी कविताओं में बड़ी बारीकी से उकेरा है। इनकी 'जीवन की जय हो' कविता से एक उदाहरण देखिए-

मृषा मृत्यु का भय है

जीवन की ही जय है ।
जीव की जड़ जमा रहा है
नित नव वैभव कमा रहा है
यह आत्मा अक्षयहै
जीवन की ही जय है

जीवन दर्शन ही नहीं अपितु प्रकृति और वातावरण के चित्रण में में भी वे किसी से कम नहीं हैं। अलंकारों और मनोरमता से सुसज्जित पंचवटी संग्रह की एक कविता दृष्टव्य है-
चारु चंद्र की चंचल किरणें,
खेल रहीं हैं जल थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है,
अवनि और अम्बरतल में।

इनकी भारत- भारती कविता संग्रह की कविताओं में देश- प्रेम और मानवतावाद की स्थापना हुई है। इस संग्रह की देश प्रेम से सराबोर चार चार पंक्तियां अत्यधिक प्रसिद्ध हैं-
भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

इस संग्रह की कविताओं में कर्मवाद और जीवन दर्शन की सफल अभिव्यक्ति हुई है। इस संग्रह की कविताओं में वे मानव को प्रेरणा देते हुए लिखते हैं-
नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो,कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो

इनके यशोधरा संग्रह में गौतम बुद्ध के बचपन और गृहत्याग की घटना को आधार बनाया गया है। इसमें मां अपने बेटे को कहानी सुनाती हुई कहती है-
गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से,
गिरा बिद्धहोकर खग शर से,
हुई पक्षी की हानी।
हुई पक्षी की हानी

करुणाभरी कहानी!

यशोधरा में नारी की वेदना को भी साकार रूप मिला है-

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध, आंखों में पानी।।

इनके साकेत महाकाव्य में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के विरह वर्णन का मार्मिक प्रसंग चित्रित हुआ है। वस्तुत: महावीर प्रसाद द्विवेदी के सरस्वती में प्रकाशित लेख 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से प्रेरित होकर गुप्तजी ने साकेत की रचना की। उर्मिला के विरह को दर्शाने वाला एक उदाहरण दृष्टव्य है-

मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी,
कुछ तो दया विचारो

इनकी 'भारत माता का मंदिर यह' कविता में देशप्रेम के बहाने समानता, सर्व धर्म समभाव और समस्त मानव जाति के कल्याण की कामना की गई है-

भारत माता का मंदिर यह
समता का संवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
जाति-धर्म या संप्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ।

मैथिलीशरण गुप्त का कविताओं के स्वर पूरी धरा के लोगों के हित की बात करते हैं,उनकी भावनाओं में संकीर्णता नहीं, अपितु विराटता है इसीलिए तो वे जन सेवा, जगत सेवा को ही सर्वोच्च मानते हैं-

न तन सेवा, न मन सेवा
न जीवन और धन सेवा
मुझे है इष्ट जन सेवा
सदा सच्ची भुवन सेवा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का काव्य समानता, प्रेम, विश्वबंधुत्व, जातीय एकता, धार्मिक एकता, कर्मवाद, मानवतावाद, परोपकार, जनसेवा, समाजसेवा आदि वैश्विक मूल्यों को स्थापित करने वाला है। श्री गुप्त अपनी कविताओं के माध्यम से विश्व में मानवीय मूल्यों को प्रसारित करते दीखते हैं।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें